अध्याय 12

कनान जाने के लिए अब्राहम की बुलाहट

संसार में पाप के और परमेश्वर का दंड जल प्रलय के साथ आने के वर्णन के बाद (अध्याय 1-11), उत्पत्ति का दूसरा मुख्य भाग सामने आता है (अध्याय 12-50)। श्राप को हटाने के लिए परमेश्वर अपनी योजना को लागू करने लगा जो उसने अदन की वाटिका में मनुष्य के विद्रोह के कारण से मानव जाति पर घोषित की थी। उसने इस्राएल जाति, उसकी वाचा के लोग, को स्थापित करने के लिए अब्राहम, इसहाक और याकूब के द्वारा कार्य करना आरम्भ किया। इस वंशावली से (उसकी मानवीय पितरावली के अनुसार) अंततः मसीह आएगा।

अध्याय 12 अब्राहम की बुलाहट के और जो प्रतिज्ञाएँ पहले पहल उसने अब्राहम के साथ कीं उसके विषय बताता है। यह उस बुलाहट के प्रति अब्राहम के अनुकूल प्रत्युत्तर, और उसके कनान, प्रतिज्ञा के देश में जाने के विषय भी बताता है। इस अध्याय का समापन संकेत करता है कि अकाल के कारण से, अब्राहम मिस्र देश में चला गया। इस कुलपति के छल के बावजूद भी, परमेश्वर ने उसके परिवार की रक्षा की और ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं को बचाया।

अब्राहम की बुलाहट (12:1-3)

[1]यहोवा ने अब्राम से कहा, "पने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। [2]और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। [3]और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"

आयत 1. उत्पत्ति के लेखक ने इस बात को माना कि परमेश्वर ने अब्राहम को पहले बुलाहट दी थी (देखें 11:31)। मेसोपोटामिया के दक्षिण भाग में प्राचीन ऊर से उसे बुलाया था। इस बात को उत्पत्ति 15:7 में बताया गया है, इसके साथ ही साथ नहेम्याह 9:7 और प्रेरितों के काम 7:2-4 में भी बताया गया है। हारान को छोड़ने के लिए परमेश्वर की बुलाहट के समय, यह कुलपति बहुत वर्षों से वहाँ रह रहा था जिसको उसने अपनी जन्म भूमि मान लिया था। इसलिए, **अब्राहम के**

लिए ईश्वरीय आदेश था अपने देश और अपने सगे सम्बंधियों और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में जाना था जो परमेश्वर उसे दिखाएगा। इस बुलाहट में, अब्राहम के जाने के विषय सभी निर्देश दिए गए थे। बुलाहट की परिभाषा सामान्य से विशिष्टता की ओर चली गई, जिस में परिवार से पूर्ण रूप से अलग होने का संकेत था। सबसे पहले उसका "देश" जिसमें हारान के आस पास का सारा क्षेत्र शामिल था। दूसरा, उसके "सगे सम्बन्धी" बड़े जातीय समूह को दर्शाता है जिस में से वह था। अंत में "अपने पिता का घर" यह तेरह के विस्तृत परिवार को दर्शाता है, जो कि 11:27-32 की वंशावली में पाया गया है। अपने देश, सगे सम्बंधियों और अपने पिता के घर को छोड़ने का अर्थ था कि अब्राहम को अपनी विरासत के अधिकार छोड़ने होंगे, जिसमें सम्भवत: परिवार की सम्पत्ति भी शामिल थी।

"जाने" का आदेश कर्मकर्त्ता सर्वनाम के प्रयोग से दृढ़ हो गया לְךָ-לְךָ *(लेक-लेका)* ताकि कथन का शाब्दिक हो "तुम जाओ।"[1] यह अब्राहम के लिए एक चेतावनी थी कि भले ही पहले पहल की बुलाहट में परमेश्वर ने उसे ऊर में अपने सगे सम्बंधियों को छोड़ने के लिए कहा था, वे किसी न किसी तरह हारान तक उसके साथ आए थे, यह आदेश और भी स्पष्ट रूप से इस तरह से समझा जा सकता है "तुम ही जाओ।"[2] इस विवरण ने कुलपति को यह घोषित करने के लिए तैयार कर दिया होगा कि उसकी मंज़िल वह देश था जो परमेश्वर एक "बड़ी जाति" के लिए तैयार कर रहा था जो उस में से निकलेगी (12:2, 7)।

आदेश का यह भी अभिप्राय है कि परमेश्वर चाहता था कि अब्राहम अपने सगे सम्बंधियों से बिलकुल अलग हो जाए ताकि वह परमेश्वर के जन के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर सके, परिवार के दबाव या अपना ध्यान भंग किए बिना। यह ईश्वरीय योजना उसके जीवन में तभी पूरी हो सकेगी यदि अब्राहम आज्ञाकारी विश्वास के साथ चलेगा अर्थात परमेश्वर पर भरोसा करते हुए चलेगा, जो उसका मात्र पथ प्रदर्शक है, प्रतिज्ञा किए हुए देश के लिए उसी का अनुसरण करेगा। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने लिखा, "विश्वास ही से ... न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया" (इब्रा. 11:8)।

आयत 2. परमेश्वर ने इस ईश्वरीय बुलाहट का छ: गुणा प्रतिज्ञा के साथ समर्थन किया और वह अब्राहम को यह कहने लगा, "**मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा**" (देखें 18:18; 21:8; 46:3)। इस प्रतिज्ञा पर विश्वास करना बहुत कठिन बात थी क्योंकि इस समय कुलपति की आयु पचहत्तर वर्ष की हो गई थी और उसके पैंसठ वर्ष की बाँझ पत्नी थी; वह गर्भवती नहीं हो पाई थी और एक बच्चे को भी जन्म नहीं दे पाई थी (11:30)। इस बुलाहट में "अदृश्य" (देश) और "अभी तक नहीं था" (वंश) (देखें इब्रा. 11:1, 6-10; NEB) पर विश्वास करने की ज़रूरत थी, जिसको देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी।

अब्राहम को "एक बड़ी जाति" बनाने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बाद, परमेश्वर ने उसे एक प्रतिज्ञा दी जो स्वाभाविक रूप से सामान्य प्रतिज्ञा थी: **"मैं तुम्हें आशीष दूँगा।"** आयत 2 और 3 में आशीष की प्रतिज्ञा महत्वपूर्ण है। पाँच

बार इस शब्द को संज्ञा या क्रिया के रूप में प्रयोग किया गया है। क्रिया "आशीष" בָּרַךְ *(बारक)* को पुराना नियम की अन्य किसी भी पुस्तक से उत्पत्ति की पुस्तक में अधिक प्रयोग किया गया है। संदर्भ के आधार पर, यह प्रकट करता है कि परमेश्वर कई तरीकों से अपने लोगों को आशीषित करना पसंद करता है: समृद्धि, भलाई, दीर्घायु, मेल, अच्छी कटनी, संतान पैदा करने के किए प्रजनन क्षमता इत्यादि।

जबकि दूसरा कथन एक सामान्य आशीष थी, परमेश्वर ने अपनी बात को जोड़ा, **"और तेरा नाम बड़ा करूंगा।"** प्राचीन काल के पूर्वी क्षेत्रों में, शाही शिलालेखों राजाओं की प्रशंसा करना या बड़े नाम की प्रतिज्ञा यह आम बात थी। इसके अनुरूप दाऊद के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा: "मैं तेरे नाम को पृथ्वी पर के बड़े-बड़े लोगों के नामों के समान महान कर दूंगा" (2 शमूएल 7:9)।

अब्राहम की "बड़ा नाम" करने की ईश्वरीय प्रतिज्ञा वह एक संकल्प के रूप में खड़ी है कि वह व्यापक रूप से जाना जाएगा विशेषरूप से आनेवाली पीढ़ियों के लिए, जो उसे विश्वासयोग्य पिता के रूप में देखेंगी (रोमियों 4:16)। बड़े नाम का विचार उत्पत्ति 6:4 में वर्णित दुष्ट शूरवीरों की ख्याति के विपरीत खड़ा होता है, जो अपनी हिंसा के कारण जाने जाते थे, और गुम्मट बनानेवाले जिन्होंने उत्पत्ति 11:4 में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने से अपने लिए नाम कमाना चाहा। परन्तु यह बड़ा नाम कुछ ऐसा नहीं था जिसको अब्राहम अपने प्रयास से पकड़ता या प्राप्त करता। यह तो परमेश्वर के वरदान और अब्राहम को बनाने और उसको प्रयोग करने वाले उसके ईश्वरीय कार्य के परिणाम स्वरूप होना था। उसको आदर का पात्र होना था (2 तीमु. 2:20, 21) और समस्त संसार के लिए परमेश्वर की ईश्वरीय योजना के पूरे होने में उसे एक भाग बनना था।

प्रतिज्ञा का अगला भाग, **"और तू आशीष का मूल होगा,"** साधारण रूप से पिछली पंक्ति का शेष भाग ही समझा जाता है। इसकी कई तरह से व्याख्या की गई है। कुछ लोग इसके अर्थ को इस तरह बताते हैं कि जो बड़ा नाम अब्राहम को दिया गया भावी आशीषों में वर्णित किया जाएगा (NEB)। अन्य लोग आग्रह करते हैं कि वे लोग जो उसके आदर्श का अनुसरण करेंगे उसको समृद्धि और प्रसन्नता के आदर्श के रूप में उसका नाम स्मरण करेंगे। एक अन्य विचार यह है कि यह संसार के लिए मात्र भविष्य की आशीषों की प्रतिज्ञा है, परमेश्वर जो 3 आयत के अंतिम भाग में पुष्टि करने वाला था उसी का पूर्वाभास है।

ये सभी व्याख्यान इस तथ्य को समझने में कठिन हैं कि इब्रानी भाषा वास्तव में मध्यम पुरुष पुल्लिंग एकवचन आदेशात्मक रूप अब्राहम को "आशीष होने के लिए" कह रहा है।[3] इसलिए, यह आशीष नहीं थी (बड़ा नाम) जिसे अब्राहम को प्राप्त करना था न ही परमेश्वर उन आशीषों का उल्लेख कर रहा था जो अन्य लोग उसके नाम से लेंगे। इसके अतिरिक्त, यह भविष्यवाणी नहीं थी जो अब्राहम के वंशज एक दिन उस भविष्यवाणी को स्मरण करेंगे कि कुलपति ने अपने जीवनकाल में समृद्धि का आनन्द उठाया और उन्हीं सुविधाओं आशा की। अब्राहम को यह आदेश था कि उसे अपने आस पास लोगों के लिए "आशीष

बनना है।" जब परमेश्वर किसी एक व्यक्ति या जाति को आशीष देता है, वह इस तरह के वरदानों को उन्हीं लोगों में ही समाप्त नहीं कर देता; और ये वरदान भीतर ही रहने के लिए नहीं होते। परमेश्वर चाहता है जो लोग आशीषित हुए हैं महसूस करें कि बदले में उनको "आशीष बनने" का प्रयास करना चाहिए जो लोग उनको जीवन में मिलते हैं।

आयत 3. परमेश्वर ने अगले तीन कथनों को जारी रखा, **"जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा"** के साथ आरम्भ किया। इन्हीं वचनों का प्रयोग बाद में इसहाक के द्वारा किया गया, जिसने अनजाने में याकूब को यह सोचते हुए आशीष दी कि वह एसाव है (27:29)। उनके विषय नबी बिलाम के द्वारा भी कहा गया था, इस्राएल जाति को आशीष देने के लिए मात्र इसी नबी को परमेश्वर ने भेजा था (गिनती 24:9)। बाद के इन दो मामलों में, सम्बन्धित आशीषें अव्यक्तिगत थीं, जिसमें बिना नाम लिए केवल "जो तुम्हें आशीष देंगे" और "जो कोई तुम्हें आशीष देगा" कहा गया। इसके विपरीत, परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष देने में प्रथम पुरुष का प्रयोग करते हुए कहा, "मैं आशीष दूँगा।" परमेश्वर के शब्दों ने उस घनिष्ठ सम्बन्ध पर बल दिया जो उसके और कुलपति के बीच विद्यमान था, इसके साथ ही साथ वह चिन्ता भी जो परमेश्वर को उसके लिए थी। जिस व्यक्ति का सम्बन्ध अब्राहम के साथ सही था, उसे परमेश्वर आशीष देगा।

अगले चरण में, परमेश्वर ने कहा, **"जो तुम्हें श्राप देगा उसे मैं श्राप दूँगा।"** पिछली प्रतिज्ञा के विपरीत, जो कोई अब्राहम को श्राप देगा, वह परमेश्वर के द्वारा शापित होगा, इस तरह के व्यक्ति का उस व्यक्ति के साथ सही सम्बन्ध नहीं था जो परमेश्वर के द्वारा सारे संसार को आशीष देने के लिए चुना हुआ पात्र है। शत्रुओं ने कई तरह से अब्राहम को श्राप दिया होगा: उसके विषय भला बुरा कहने के द्वारा, उसकी प्रतिष्ठा का नष्ट करने से, उसको नुकसान पहुँचाने से, या उसकी कोई वस्तु या उसका कुछ लेने से जो अब्राहम का ही था। उदाहरण के लिए फिरौन का इस कुलपति के साथ सही सम्बन्ध नहीं था क्योंकि उसने उसकी पत्नी को अपने महल में ले लिया था (12:10-17)। भले ही उसने ऐसा अनजाने में किया, इस बात से अज्ञात था कि वह विवाहित थी, फिरौन अब्राहम के विरुद्ध अपराध करने के द्वारा अपने ऊपर परमेश्वर के श्राप (रोग और "विपत्तियाँ") को अपने सारे घराने पर लाया।

तब परमेश्वर ने इस आशीष के अन्तिम भाग की घोषणा की, और अब्राहम की बुलाहट का उच्च और निश्चित लक्ष्य है: **"और भूमंडल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"** आयत 2 में, परमेश्वर ने कुलपति को "आशीष होने के लिए" उत्साहित किया, और अब उसने उस आदेश को बढ़ाया अब्राहम को आशीषों का एक वाहक बनना था जिसको उसके परिवार के लोगों में, मित्रों में और आस पास के लोगों तक पहुँचना था। वास्तव में, मौलिक आशीष विस्मयकारी थी, क्योंकि इसमें वह आशीष है जिससे संसार के सब लोगों को आशीष मिलने वाली थी - यहाँ तक कि भयावह वह जातियाँ भी जिनका वर्णन अध्याय 4 से 11 में किया

गया है, इसके अतिरिक्त वह लोग भी जो बाद में आएंगे। परमेश्वर ने कई वर्षों के बाद इस प्रतिज्ञा को अब्राहम पर दोहराया (28:18), फिर इसहाक पर दोहराया (26:4), और अन्त में याकूब पर दोहराया (28:14), जिसके 12 पुत्रों को इस्राएल जाति को उत्पन्न करना था। परमेश्वर का अब्राहम के लिए परम उद्देश्य कनान देश के उपजाऊपन से और उसके परिवार की समृद्धि से कहीं बढ़कर प्रक्षेपित था जो इस देश में बसने वाले थे। अब्राहम को लोगों का ऐसा कुलपिता बनना था जिसके द्वारा ईश्वरीय आशीषों को प्रवाहित होना था, और जिसको "बीज" (वंशज) और "संसार के मुक्तिदाता" के रूप में की गई प्रतिज्ञा यीशु मसीह के आने के साथ पूरी हुई (यूहन्ना 4:42; प्रेरितों 3:25; गला. 3:8; 1 तीमु. 2:3-6)।

ईश्वरीय बुलाहट के प्रति अब्राहम की प्रतिक्रिया (12:4-9)

4यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला; और लूत भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था। 5सो अब्राम अपनी पत्नी सारै, और अपने भतीजे लूत को, और जो धन उन्होंने इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्होंने हारान में प्राप्त किए थे, सब को ले कर कनान देश में जाने को निकल चला; और वे कनान देश में आ भी गए। 6उस देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में, जहां मोरे का बांज वृक्ष है, पहुँचा; उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे। 7तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा: और उसने वहां यहोवा के लिये जिसने उसे दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई। 8फिर वहां से कूच करके, वह उस पहाड़ पर आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है; और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ है; और वहां भी उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और यहोवा से प्रार्थना की 9और अब्राम कूच करके दक्खिन देश की ओर चला गया।

आयतें 4, 5. हारान में कई वर्ष व्यतीत करने और अपने पिता तेरह की मृत्यु के बाद कुलपति के पिता की मृत्यु हो गई (11:32), **अब्राम** विश्वास से **आगे बढ़ता चला गया जैसा परमेश्वर ने उसे कहा था** (देखें प्रेरितों 7:4)। **कनान देश में** जाने के प्रति उसकी ईश्वरीय बुलाहट के समय, **वह पचहत्तर वर्ष की आयु का था**; परन्तु अभी भी उसके कोई सन्तान नहीं थी क्योंकि सारा बांझ थी। एक बार फिर उसके विश्वास को चुनौती मिली। अपने समस्त परिवार को पीछे छोड़ने के लिए वह राज़ी नहीं था, उसने अपने साथ अपने **भतीजे लूत को लिया**, सम्भवत: इस उद्देश्य के साथ कि यदि सारा के कोई सन्तान न हुई तो उसे उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया जाए। लेखक ने अब्राहम के उद्देश्य को लिखा नहीं है।

अपनी सारी सम्पत्ति ... और परिवार के सदस्यों के साथ जो उसके साथ थे, अब्राहम और लूत ने कनान देश की ओर अपनी यात्रा को आरम्भ किया।

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा कि "यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया" (इब्रा. 11:8)। वह बस यही जानता था कि कनान देश बहुत दूर है (हारान के दक्षिण पश्चिम में लगभग चार सौ पचास मील दूर) और यह कि कुलपति और बाकी लोगों के लिए आसान यात्रा नहीं होगी। स्पष्ट रूप से, अब्राहम और लूत दोनों ही के पास उनकी देखभाल के लिए और उनके जानवरों और भेड़ बकरियों की रक्षा के लिए बड़ी संख्या में सेवक (दास[4]) थे; परन्तु यह मनुष्य दक्ष योद्धा भी थे जिनको युद्ध के लिए बुलाया जा सकता था यदि कोई ऐसी स्थिति हो जाए तो।[5]

फिर भी, इस तरह के लम्बी और जोखिमभरी यात्रा करने, महानदी के जल विभाजक क्षेत्र को छोड़ने और ऐसे कम आबादी वाले क्षेत्रों में गुज़रने का जहाँ पर यात्रियों पर लुटेरों के द्वारा आक्रमण होता था, इन सब बातों के लिए निर्णय करना हल्की बात नहीं थी। सम्भवतः वे हारान से पश्चिम की ओर कर्कमीश गए और फिर दक्षिण की ओर अलेप्पो गए। वहाँ से, वे दक्षिण की ओर दमिश्क[6] का मुख्य मार्ग ले सकते थे और फिर कनान देश जा सकते थे। परन्तु यह भी एक कठिन यात्रा थी क्योंकि उनको कुछ ऐसे क्षेत्रों में होकर जाना था जो उनके अपने देश हारान क्षेत्र के नज़दीक बलिह नदी के समान उपजाऊ क्षेत्र नहीं थे। जब वे अपनी मंज़िल पर पहुँचे, सम्भवतः वे बाशान की ओर उतरे (आज वह गोलान हाइट्स के नाम से जाना जाता है), पश्चिम की ओर घूमते हुए उन्होंने यरदन नदी पार की और कनान देश में पहुँच गए।

आयत 6. दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए, **अब्राम शकेम के पास से गुज़रा**। यह नगर दो पहाड़ियों के बीच कनान देश के मध्य में स्थित था, एबाल और गरिज्जीम।[7] कुलपति के लिए यह स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बन गया और बाद में इस्राएलियों के लिए, इसका प्रायः वर्णन हुआ है (33:18; 35:4; 37:12, 13; यहोशू 24:1; न्यायियों 9:6; 1 राजा 12:1)।

शकेम में, अब्राहम मोरे के **बांज वृक्ष के पास** पहुँचा, जो कि उस क्षेत्र का सबसे प्रमुख स्थान था जिसमें बहुत सारे बांज वृक्ष थे।[8] यह वही स्थान है जहाँ बाद में याकूब ने अपने घराने की मूर्तियों को दबाया था (35:4), जहाँ पर यहोशू ने बड़ा पत्थर चुन कर खड़ा किया था (यहोशू 24:25, 26), और जहाँ अबीमेलेक को नगर का राजा बनाया था (न्यायियों 9:6)।

अगला कथन बताता है कि **देश में कनानी लोग रहते थे**। लेखक की यह मात्र एक टिप्पणी हो सकती है कि कनानी उस देश में पहले ही रह रहे थे जब कुलपति वहाँ पहुँचा और परमेश्वर ने यह देश उसके वंशज को देने की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए, संकेत चिन्ह इस बात की व्याख्या कर सकते हैं कि अब्राहम ने उसी समय उस देश पर कब्ज़ा क्यों नहीं किया। वहीं दूसरी ओर, यह भी हो सकता है कि उत्पत्ति के पाठकों को स्मरण करवाने के लिए बाद में सम्पादकीय टिप्पणी जोड़ी गई हो कि जब अब्राहम वहाँ पर पहुँचा तो कनानियों का कनान देश पर मुख्य रूप से नियन्त्रण था। इस मामले में, पवित्रात्मा की प्रेरणा से बहुत वर्षों के बाद मूसा के समय में यह कथन लिखा गया, इस्राएलियों द्वारा कनानियों, जो

कि वास्तव में प्रतिज्ञा के देश के लिए खतरा थे उनका सफाया किए जाने के बाद। इस कथन या विश्वास के संघर्ष के सही-सही अर्थ पर ध्यान दिए बगैर कि अब्राहम ने पहले ही से प्रतिज्ञा के देश में आने पर इस बात को भांप लिया था, कनानियों के कब्ज़े किए हुए क्षेत्र में उनके बीच कुलपति स्थिर बना रहा।

आयत 7. इस कठिन समय में **परमेश्वर अब्राहम पर प्रकट हुआ**। उत्पत्ति के वर्णन अनुसार, यह परमेश्वर के प्रकट होने का पहला वर्णन है जो अब्राहम ने प्राप्त किया (देखें 15:17; 17:1; 18:1), यहाँ तक स्तिफनुस ने पहले ही ऊर में इसका उल्लेख किया है जिसका सम्बन्ध आरम्भ की बुलाहट से है (प्रेरितों 7:2)।[9] यह किस रूप में प्रकट हुआ यह अस्पष्ट है; परन्तु, यह जो भी था, इसने कुलपति को उस नए देश में परमेश्वर की उपस्थिति का भरोसा दिलाया।

तब यहोवा ने प्रतिज्ञा की, "**यह देश मैं तेरे वंशों को दूँगा**," भले ही उस समय अब्राहम के कोई सन्तान नहीं थी। शब्दावली जो यहाँ पर इब्रानी भाषा זֶרַע *(ज़ेरा)* से अनुवाद की गई "वंशों" है, जिसका शाब्दिक अर्थ "बीज" है। इसे नियमित रूप से जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग किया गया है और बहुवचन "वंशों" के रूप में अनुवाद किया गया है (RSV; NEB)। इस संदर्भ में, यह बात तो स्पष्ट है कि अब्राहम का "बीज" आने वाले इस्राएलियों का उल्लेख करता है, जो उसके वंशज होंगे और प्रतिज्ञा के देश को अपने अधिकार में लेंगे, और यह शब्द मूल भाव है जो उत्पत्ति की सारी कहानी में मिलता है।[10]

पूर्वगामी ईश्वरीय दर्शन और प्रतिज्ञा के प्रत्युत्तर में अब्राहम का पहला कार्य परमेश्वर के लिए **वेदी बनाना था**।[11] उसने यहोवा का आभार प्रकट किया और उसकी आराधना की जो उसे लम्बी और जोखिम भरी मेसोपोटामिया से हारान और फिर कनान देश तक की यात्रा में सुरक्षित पहुँचाया। जबकि कुछ लोग इस बात से इनकार करते हैं कि यह वेदी चढ़ावे की आराधना लगती है, कोई और उद्देश्य तो अस्पष्ट है। क्योंकि यह बिना जानवर की बली के अब्राहम की बनाई वेदी का पहला निश्चित वर्णन है, यह भी कहा गया है कि यह वेदी तो कुलपति के विश्वास का एक चिन्ह थी कि उसके वंशज एक दिन इस देश को प्राप्त करेंगे जिसकी परमेश्वर ने उन्हें प्रतिज्ञा दी है। इसके बावजूद भी, उत्पत्ति के आरम्भ से ही, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के लिए भेट चढ़ाई गई। हाबिल ने परमेश्वर को जानवर की भेट चढ़ाई (4:4), नूह ने जलप्रलय के बाद ऐसा किया (8:20), और बाद में अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक के स्थान पर मेढ़े को होमबलि करके चढ़ाया था (22:13)। इस तरह का संदेहावाद 19वीं शताब्दी की डाक्यूमेंट्री हाइपोथिसिस के सिद्धान्तवादी पूर्वधारणाओं से चला आता है, जो दावा करता है कि इसके बहुत समय के बाद याजकों ने इस तरह की चढ़ावे की आराधना की खोज की और फिर उन्होंने इसे कुलपतियों की कथाओं में पढ़ा।

कुछ लोग ऐसा भी विचार करते हैं कि यह ईश्वरीय दर्शन तब तक नहीं था जब तक कि अंततः कुलपति ने यह महसूस नहीं किया कि यहोवा कोई अन्य देवता नहीं था, परन्तु यह मूर्तिपूजा के क्षेत्रिय देवताओं से महान था। आखिरकार, प्राचीन लोगों ने भरोसा कर लिया कि उनके देवताओं की शक्ति

उनके भौगोलिक क्षेत्रों जैसे मेसोपोटामिया या कनान तक ही सीमित थी। परन्तु, अब्राहम ने ऊर में अपने घर को या बाद में हारान में ऐसे ही नहीं छोड़ दिया था जब तक कि उसे भरोसा नहीं हो गया था कि यहोवा उसको, उसके दासों को और नए देश में उसकी सम्पत्ति को जिसमें वह जा रहा था सुरक्षा देने के लिए अति पर्याप्त था।

हम जानते हैं कि अब्राहम अपने परिवार की तरह ऊर में परमेश्वर के बुलाए जाने से पहले अन्य देवताओं की पूजा करता था (यहोशू 24:2, 3); और हमें यह नहीं बताया गया है कि उस मूर्तिपूजा का इनकार करने में और सृष्टि पर परमेश्वर के रूप में उस पर विश्वास करने में कितना समय लगा। वास्तव में, बाइबल का वर्णन स्वयं ही प्रकट करता है कि कुलपति को इस विचार को समझने में समय लगा कि परमेश्वर सच्च में "सर्वशक्तिमान" था (17:1) और उसके लिए "कुछ भी असम्भव" नहीं (18:14)। वहीं दूसरी ओर, इब्रानियों 11:8 कहता है कि "विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था।" जबकि परमेश्वर में विश्वास न केवल यही भरोसा करना होता है कि "वह है," परन्तु यह भी "कि अपने खोजने वालों को वह प्रतिफल देता है" (इब्रा. 11:6), अब्राहम पूर्ण रूप से आश्वस्त था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में सक्षम तथा विश्वासयोग्य है।

आयत 8. शकेम, अब्राहम से पूर्व दिशा में पहाड़ की ओर चला गया **और बेतेल और ऐ नगर के बीच में अपने तम्बू गाड़े**। बेतेल को सामान्य रूप से बेटिन के नाम से जाना जाता था जो कि यरूशलेम से उत्तर की ओर लगभग 10 मील की दूरी पर था और ऐ को एट-टैल समझा जाता था (बेटिन के दक्षिण पश्चिम में लगभग दो मील दूर), यद्यपि अभी भी कइयों को इस पहचान में संदेह है।[12] बेतेल का मूल नाम "लूज़" था (28:19), परन्तु लेखक ने यहाँ बदलाव की सम्भावना में इसके नए नाम का प्रयोग किया।

अब्राहम ने अपने तम्बू गाड़ने के बाद, **उसने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई।** प्रमुख बात है यह कि जहाँ भी उसने यात्रा की, कुलपति ने कभी भी कनान की वेदी का प्रयोग नहीं किया। उसने हमेशा अपने आप ही उसे बनाया। वचन यह भी कहता है कि अब्राहम ने **यहोवा के नाम को पुकारा** (4:26 की टिप्पणी को देखें)। तथ्य यह कि उसने परमेश्वर के नाम को पुकारा इस बात पर बल देता है कि उसने प्राचीन मूर्तिपूजक संसार के सामान्य व्यवहार को और हमेशा साथ रहने वाले देवताओं को त्याग दिया था। परमेश्वर के नाम को पुकारने का अर्थ यह है कि उसने यहोवा को कनान देश का परमप्रधान परमेश्वर स्वीकार कर लिया था जो उसने अब्राहम के वंशज को देने की प्रतिज्ञा की थी।

आयत 9. कुलपति ने अपनी यात्रा जारी रखी, उत्तर से दक्षिण की ओर **नेगेव की ओर चला गया**। नेगेव प्रतिज्ञा के देश के दक्षिण दिशा की ओर एक बड़ा क्षेत्र था जो बेर्शेबा के नज़दीक यहूदा के पहाड़ से लेकर दक्षिण की ओर कादेशबर्ने तक फैला हुआ था। सैकड़ों वर्ष के बाद, इस्राएलियों ने कादेश में डेरे डाले और हर एक गोत्र से एक-एक व्यक्ति कनान देश का भेद लेने के लिए भेजे थे (गिनती

13:1-26)। क्षेत्र में थोड़ी आबादी थी क्योंकि सामान्य खेतीबाड़ी के लिए पर्याप्त वर्षा की कमी थी, औसतन हर वर्ष आठ इँच ही होती थी। परन्तु ज़मीन की नमी जानवरों के लिए घास उगाने के लिए पर्याप्त थी, कम से कम वर्ष की वसंत ऋतु में।

अब्राहम और सारा मिस्र देश में (12:10-20)

12:1-9 और 12:10-20 में दर्शाई गई घटनाओं के बीच कितना समय बीत गया, हम नहीं जानते। कनान देश के दक्षिण भाग में वर्षा हमेशा छिटपुट रूप से ही होती थी; और निस्संदेह, मनुष्यों और जानवरों को आर्थिक रूप से निर्वाह करना जरूरी था। कई महीने, यहाँ तक कि वर्ष बीत गए वर्षा नहीं हुई और अब्राहम के समूह को खतरा हो गया; परन्तु समय आया जब जीने और मरने का निर्णय सामने आ गया और उन्हें कनान देश छोड़ना पड़ा।

मिस्र देश में अब्राहम की चालाकी (12:10-16)

10और उस देश में अकाल पड़ा: और अब्राम मिस्र देश को चला गया कि वहां परदेशी हो कर रहे - क्योंकि देश में भयंकर अकाल पड़ा था। 11फिर ऐसा हुआ कि मिस्र के निकट पहुंचकर, उसने अपनी पत्नी सारै से कहा, सुन, मुझे मालूम है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है: 12इस कारण जब मिस्री तुझे देखेंगे, तब कहेंगे, यह उसकी पत्नी है, सो वे मुझ को तो मार डालेंगे, पर तुझ को जीती रख लेंगे। 13सो यह कहना, कि मैं उसकी बहिन हूं; जिस से तेरे कारण मेरा कल्याण हो और मेरा प्राण तेरे कारण बचे। 14फिर ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्र में आया, तब मिस्रियों ने उसकी पत्नी को देखा कि यह अति सुन्दर है। 15और फिरौन के हाकिमों ने उसको देखकर फिरौन के सामने उसकी प्रशंसा की: सो वह स्त्री फिरौन के घर में रखी गई। 16और उसने उसके कारण अब्राम की भलाई की; सो उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, दास-दासियां, गदहे-गदहियां, और ऊंट मिले।

आयत 10. अकाल के समय में, अब्राहम ने लोगों को, जानवरों को और चरवाहों को अपने साथ लेकर **मिस्र देश में परदेशी होकर रहने के लिए चला गया**। प्रवासी होने के कारण पर ज़ोर देकर बार-बार दोहराया गया है: कनान उनके घराने के लिए अब और जीविका प्रदान नहीं कर सकता था क्योंकि **देश में अकाल बहुत गम्भीर था** (देखें 26:1; 41:54, 56; 43:1)।[13]

निस्संदेह, अब्राहम ने सुना होगा कि मिस्र देश में अधिकाधिक भोजन उपलब्ध था। चाहे देश में थोड़ी ही वर्षा होती थी, इसकी उपजाऊ शक्ति मध्य अफ्रीका में वर्षा से होती थी, जिससे नील नदी हर वर्ष बहुत बहती थी और ज़मीन पर घनी और नई तल छट को बिछा देती थी। तब जब नील नदी का जल पीछे हट जाता था, ज़मीन के जल सोखने के बाद, ज़मीन भरपूर फसल उपजाती थी। बहुत से लोग मिस्र देश को मेडिटेरेनियन जगत की रोटी की टोकरी के रूप

में देखते थे। क्योंकि अधिकांश भाग, जैसे आस पास देश सूखे के कारण आर्थिक संकट झेल रहे थे यह ऐसा संवदेनशील नहीं था।

इन सुविधाओं के अतिरिक्त, अब्राहम ने अन्य अफवाहें भी सुनी थी। मिस्री वहाँ बाहर से आने वाले लोगों को जिनकी सुन्दर पत्नी होती थी उसको अपनी बनाने के लिए उनकी हत्या कर देते थे। यह वह स्थान नहीं था जहाँ अब्राहम रहने का इरादा करता। "परदेशी" גּוּר *(गुर)* होने का अर्थ था ग़ैर बनकर रहना। उसे और सारा को अस्थाई निवासियों के रूप में मिस्र देश में रहना था, नागरिक सुरक्षा अधिकारों से रहित। परिस्थितियों में कुलपति को ऐसा करना चाहिए था कि वह रुकता और परमेश्वर की अगुवाई को प्राप्त करता कि उसे किस पथ पर जाना चाहिए। अकाल के बावजूद भी उसकी पहला विकल्प यही था कि वह उसी देश में रहता जहाँ परमेश्वर उसे लेकर आया था। कनान देश को छोड़ना और मिस्र देश जाना दूसरी सम्भावना थी। चाहे उस कार्य के दौरान खतरा था और सम्भवतः मृत्यु। एक बार फिर, अब्राहम ने अपने विश्वास के साथ संघर्ष किया, क्योंकि हमें इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि वह इस विषय को परमेश्वर के पास लेकर गया हो। उसने अपने आप ही उस देश को छोड़ने का निश्चय कर लिया जिसे परमेश्वर उसके वंशजों को देने की प्रतिज्ञा की थी (12:7) और वह जीवनयापन की युक्ति के रूप से छल को काम में लाया।

आयतें 11, 12. जैसे ही उसका समूह **मिस्र देश के नज़दीक आया**, कुलपति ने **सारा अपनी पत्नी** को सावधान किया कि **एक सुन्दर स्त्री** होने के कारण, वह मिस्रियों की निगाह में पड़ जाएगी। वह उसे देखेंगे और समझ जाएंगे कि यह उसकी पत्नी है। तब उसने कहा, **"वे मुझे तो मार देंगे परन्तु तुम्हें जीवित रखेंगे।"** अब्राहम इस बात को निश्चित रूप से जानता था कि कई प्राचीन समाजों में परदेशी प्रायः खतरे में रहते थे। जो सुरक्षा उनकी अपने देश में होती थी, वहां इस तरह की सुरक्षा और सहायता उनके लिए नहीं थी। कनान देश में उसने क्यों सुरक्षा महसूस की परन्तु मिस्र में असुरक्षा अस्पष्ट थी, इस तथ्य के अतिरिक्त यह भी एक आम बात देखी गई थी कि कुछ मिस्री पत्नी चुराने में और छुटकारा पाने के लिए हत्या करने में संलग्न थे। इसके साथ ही साथ, अब्राहम इस बात को नहीं जानता था कि फिरौन और उसके हाकिम इस तरह के कार्यों में लिप्त थे, उसे संदेह था कि सरकारी हाकिम मात्र अन्य दृष्टि से देखते थे जब मिस्री उस तरह के परदेशियों पर अपने देश में इस तरह के अत्याचारों को बढ़ावा देते थे।

जहाँ तक कि सारा की सुन्दरता के विषय अक्सर प्रश्न उठता आ रहा है। पैंसठ वर्ष की आयु[14] की महिला को कैसे इतनी सुन्दर माना जा सकता है कि कोई मनुष्य उसको पाने के लिए किसी की हत्या कर दे? इसके विषय कई व्याख्यान किए गए हैं, परन्तु सबसे अधिक उपयुक्त यह है कि कुलपति के समय में लोग लम्बी आयु तक जीवित रहते थे और आज की तुलना में जल्दी वृद्ध नहीं होते थे। सारा जबकि 127 वर्ष जीवित रही (23:1), उस समय वह वास्तव में अपने जीवन के मध्य में थी जब अब्राहम और वह मिस्र देश में गए थे।

आयत 13. अब्राहम ने सारा से बिनती की, उसे यह **कहने के लिए** सहमत किया कि वे भाई **बहन** हैं, इसके बजाए कि कहे कि पति पत्नी हैं, इससे उसको कोई हानि नहीं होगी और वह मिस्रियों के हाथ **से बचा रहेगा**। इसमें कोई संदेह नहीं कि सारा अब्राहम की पत्नी थी; परन्तु वह उसकी सौतेली बहन भी थी, क्योंकि उन दोनों का पिता (तेरह) एक ही था, परन्तु माँ अलग-अलग थी (20:12)। यहाँ हम एक बार फिर देखते हैं कि कुलपति अपने विश्वास में कच्चा था क्योंकि वह अपनी पत्नी की सुरक्षा की बजाए अपनी ही जान की चिन्ता करता है, यही कारण था कि उसने मिस्रियों से अपने सम्बन्ध को छिपाया। उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष के साथ बिस्तर पर चली जाएगी या कि उसकी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार होगा। आगे उसने इस बात पर भी विचार नहीं किया कि क्या उसकी पत्नी का विश्वास और उसका आत्मिक जीवन उसके पति के छल के कारण से उसके सदाचार के समझौते में निर्वाह कर पाएगा।

इसके साथ ही साथ, हम यह नहीं पढ़ते कि अब्राहम ने इस परदेश में इन लोगों के नुकसान से बचने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की हो। उसने प्रकट रूप से अपनी पत्नी के विषय झूठ बोलने का निर्णय कर लिया, इस बात को बनाए रखने के लिए कि उसका उसके साथ इतना ही सम्बन्ध है कि वह उसके लिए उसका भाई है। कुछ लोग अब्राहम के इस कार्य को इस अटकल के साथ हल्का करने का प्रयास करते हैं कि वह वास्तव में सारा का भाई होने का दावा इस आशा से करता है ताकि वह पुरुषों और उनके उन विवाह प्रस्तावों को मोड़ दे, जिन्हें वह होने नहीं देगा। उसने सोचा होगा कि बस अकाल हट जाए तब वह अपने परिवार को बचाकर वापिस कनान ले जाएगा। परन्तु कुलपति के बहाने के लिए इस तरह के युक्तिकरण का वचन में कोई स्थान नहीं है। विवरण स्पष्टरूप से बताता है कि अब्राहम ने कायरता पूर्वक अपने आपको उन लोगों से बचाने के लिए जो उसे मार सकते थे सारा के विषय अपने सम्बन्ध के प्रति झूठ बोला।

आयतें 14, 15. जब अब्राहम ने **मिस्र** में प्रवेश किया, तो जिसका उसे डर था वही हुआ, **मिस्रियों ने देखा कि** [सारा] **बहुत सुन्दर थी। फिरौन**[15] के हाकिमों ने भी उसकी सुन्दरता को देखा और इस बात को **राजा तक पहुँचाया**। इसके परिणामस्वरूप, उसे **फिरौन के महल में पहुँचा दिया**। अब्राहम की बिनती के प्रति सारा की किसी भी प्रतिक्रिया को वचन हमें कुछ नहीं बताता है। इस कपटी योजना के विषय उसने कैसे महसूस किया होगा? क्या उसने मिस्री हाकिमों के द्वारा राजा के महल में ले जाए जाने के लिए अपनी सहमति से सहयोग दिया और इसे उचित समझा? उसकी चुप्पी हमें यह सोचने के लिए विवश करती है कि वह अपने पति के प्राण बचाने के लिए इस धोखे की चाल में सहयोग देने के लिए सहमत हो गई, हो सकता है उसने महसूस किया हो और स्वयं को इस परिस्थिति में असहाय पाया हो। निस्संदेह, इस विचार ने कि बलपूर्वक उसका विवाह करवाने के बाद उसे एक अजनबी द्वारा भ्रष्ट किया जाएगा, उसके मन में घृणा का भाव उत्पन्न कर दिया।

आयत 16. उसी समय, अपनी बहन[16] को देने की कमी पूर्ति के लिए फिरौन ने अब्राहम को **भेड़**, **बैल**, **गदहे और ऊँट दिए और इसके अतिरिक्त उसने उसे बहुत से दास दासियाँ** (नौकर) भी दिए। जानवरों और दासों की सूची का आमतौर पर धनी व्यक्ति के साथ सम्बन्ध है विशेषकर कुलपति के समय में (देखें 20:14; अय्यूब 1:3)। इतिहास के इस आरम्भिक समय में, किसी व्यक्ति के धनी होने का निर्णय बैंक, शेयर बाज़ार और बॉण्डस में कितना धन है उससे नहीं होता था। सम्पत्ति मुख्य रूप से पशुधन होती थी; अर्थात, सम्पत्ति पशुओं और दास दासियों की गिनती से आँकी जाती थी जो उसके पास उसकी और उसके पशुओं की देखभाल और सुरक्षा के लिए होते थे। इस आधार पर अब्राहम बहुत ही धनवान व्यक्ति बन गया था। इसी तरह से लूत भी जो अब्राहम के साथ मिस्र में था (देखें 13:1), भले ही उसका विवरण यहाँ नहीं दिया गया है। अगले अध्याय में, यह देखा गया है कि इन दोनों ही पुरुषों के जानवर और चरवाहे बहुत बढ़ गए थे कि उन दोनों के चरवाहों में पशुओं के लिए घास की चरागाह के लिए झगड़ा होने लगा। यदि अकाल के समय में कनान देश में अब्राहम के पशुओं और नौकरों के जीवनयापन के लिए पानी और घास पर्याप्त नहीं था तो मिस्र देश में उसके साथ साथ जाए बिना उसके भतीजे के जानवरों का, चरवाहों का गुज़ारा और बढ़ती कैसे होती?[17]

अब्राहम के लिए फिरौन के उपहारों का एक भाग "ऊँट" भी दर्शाए गए हैं इसको कुछ बाइबल ज्ञानियों के द्वारा कालभ्रमित के रूप में देखा गया है क्योंकि बाद के ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक प्राचीन युग में इस तरह के पशुओं का आमतौर पर प्रयोग नहीं होता था। परन्तु अब 2700 ई.पू. ईरान में, 2300 ई.पू. सिन्धु घाटी में, और दक्षिण अरब में दूसरी शताब्दी 2900 ई.पू. में और 1900 ई.पू. बिर रेसिम में इस तरह के पालतू पशुओं के होने का प्रमाण मिला है।[18] यह बाद वाला समय अब्राहम के बाद अधिक लम्बा समय नहीं है। आरम्भिक काल में ऊँटों का उल्लेख इस लिए कम है क्योंकि इसे विलास साधन माना गया था। यदि ऐसा है तो, उत्पत्ति में उनके उल्लेखों ने कुलपति के धन पर ज़ोर दिया है (देखें 13:2; 24:10; 26:12-14; 31:34)।

छल के परिणाम (12:17-20)

[17]तब यहोवा ने फिरौन और उसके घराने पर, अब्राम की पत्नी सारै के कारण बड़ी-बड़ी विपत्तियां डालीं। [18]सो फिरौन ने अब्राम को बुलवा कर कहा, तू ने मुझ से क्या किया है? तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है? [19]तू ने क्यों कहा, कि वह तेरी बहिन है? मैं ने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया; परन्तु अब अपनी पत्नी को ले कर यहां से चला जा। [20]और फिरौन ने अपने आदमियों को उसके विषय में आज्ञा दी और उन्होंने उसको और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत जो उसका था, विदा कर दिया।

आयत 17. कहानी के इस क्षण में, परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और **फिरौन पर और उसके घराने परे बड़ी बड़ी विपत्तियों को डाला** क्योंकि उसने **सारै, अब्राहम की पत्नी** को ले लिया था। फिरौन के घराने पर परमेश्वर की उन विपत्तियों के विषय कि यह किस तरह की थीं बाइबल इसका कोई संकेत नहीं देती है। इब्रानी भाषा נֶגַע *(नेगा)* प्रायः इस तरह की बीमारियों का उल्लेख करती है जो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से सम्पर्क में आने पर चर्म रोग या कोढ़ हो जाता है (लैव्य. 13; 14)। परन्तु, कभी-कभी विपत्तियाँ ईश्वरीय दण्ड के रूप में सीधी आती है जैसे मूसा के समय में मिस्र पर हुई थीं (निर्गमन 11:1) और कोढ़ जिससे परमेश्वर ने राजा उज्जियाह को पीड़ित किया था (2 राजा 15:5[19])।

फिरौन ने प्रत्यक्ष रूप में विश्वास किया कि यह विपत्तियाँ परमेश्वर की ओर से आई हैं जो उसे अब्राहम की पत्नी लेने के कारण श्राप दे रहा था। क्योंकि फिरौन स्वयं को परमेश्वर मानता था, वह अब्राहम और सारा के भेद का तब तक प्रत्युत्तर न देता जब तक कि कोई सामर्थी परमेश्वर उनके कारण से फिरौन को दण्ड न दे "... जो तुम्हें श्राप दे उसे मैं श्राप दूँगा" (12:3)। कम से कम इस संदर्भ में, फिरौन अब्राहम के साथ उचित सम्बन्ध में नहीं था, उसकी पत्नी लेने के कारण से। उसे ईश्वरीय श्रापों (विपत्तियों) को झेलना था।

आयतें 18, 19. जबकि विवरण नहीं दिया गया है, राजा किसी न किसी तरह से इस परिणाम तक पहुँचा कि अब्राहम का परमेश्वर ही इन विपत्तियों का ज़िम्मेदार है जो उसके घराने पर आ पड़ी हैं (12:17)। इसलिए, **फिरौन ने अब्राहम को बुलाया**। स्वयं को दोष से मुक्त करने के लिए और सारा दोष कुलपति पर लगा दिया, उसने उससे तीन प्रश्न किए:

1. **"तू ने मुझ से क्या किया है?"**
2. **"तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह तेरी पत्नी है?"**
3. **"तू ने क्यों कहा, 'वह तेरी बहिन है,' मैं ने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के लिये लिया?"**

क्या अब्राहम ने इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया? यदि उसने किया था तो उसके उत्तरों का हमें कोई वर्णन नहीं दिया गया।[20] निस्संदेह, हम जानते हैं कि वह व्यक्तिगत रूप से मिस्र के राजा को धोखा देने में शामिल था। वहीं दूसरी ओर, फिरौन ने इस घटना में लापरवाही से कार्य किया, वह इस विषय में किसी भी तरह से निर्दोष नहीं था। भले ही फिरौन ने निर्दोष होने का बहाना किया, वह भी अपराधी था। प्राचीन युग में, मनमौजी हाकिम की इच्छाओं को इनकार नहीं किया जा सकता था; और अब्राहम अपने प्राणों के बचाव के लिए ऐसा किया जब उसने झूठ बोला। और यह भी संदेहजनक था कि यदि सारा और अब्राहम के वास्तविक सम्बन्धों को बता दिया जाता तो क्या सार्थक अन्तर होता। यदि मिस्रियों के विषय यह कहानियाँ सच्ची थीं कि वह परदेशियों के साथ और उनकी पत्नियों के साथ क्या व्यवहार करते हैं, तो कुलपति का फिरौन से

डरना उचित कारण था। समस्या यह थी कि अब्राहम का विश्वास अभी भी निर्बल था, कुलपति के वंशजों के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएंगी उसकी इस योजना को बिगाड़ने के लिए मिस्रियों को रोकने पर वह अभी भी यहोवा पर भरोसा नहीं कर सका था (12:3)।

यहाँ तक कि यदि अब्राहम ने फिरौन के प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया होता तो राजा उसकी बातें सुनने की मनोदशा में नहीं था। उसने पहले ही इस परदेशी को पशु धन, चरवाहे, दास दासियाँ देकर उसे धनी किया था; अब वह उसके द्वारा और परमेश्वर की डाली विपत्तियों के द्वारा परेशान था। उसने रूखेपन से अब्राहम से कहा, **"अब देख यह रही तेरी पत्नी, इसे ले और चला जा।"** फिरौन ने अपना दिया हुआ पशु धन, दास दासियाँ वापिस नहीं माँगे, क्योंकि उसे सम्भवतः परमेश्वर की विपत्तियों से भय था।

आयत 20. फिरौन के सम्बन्ध में, उसका सबसे बड़ा कार्य अब्राहम को जितनी जल्दी हो उतनी जल्दी मिस्र से बाहर निकालना था। इसलिए, उसने **अपने आदमियों को यह आदेश दिया** कि कुलपति और **उसकी पत्नी को और जो कुछ उसका है** उसके समेत उसको सुरक्षित बाहर ले जाएं। अब्राहम को फिरौन से बहुत सारी भेंट मिली थीं (12:16)।

अनुप्रयोग

अब्राहम के लिए परमेश्वर की बुलाहट (12:1-9)

गलातियों 3:8 में, प्रेरित पौलुस कहता है कि "पवित्र शास्त्र ने ... पहिले से ही अब्राहम को यह सुसमाचार सुना दिया।" यह कैसे हो सकता है, जबकि प्रभु यीशु मसीह के संसार में आने से पहले "सुसमाचार" था ही नहीं? इसका उत्तर "सुसमाचार" के मूल अर्थ से मिलता है। यूनानी शब्द है εὐαγγελίζομαι *(इवैंजलिओमाई),* जबकि इसके समान इब्रानी भाषा में शब्द है בָּשַׂר *(बाशार);* दोनों शुभ समाचार को सुनाने या खुशखबरी के विषय बताते हैं।[21]

पुराने नियम में बाशार शब्द आमतौर पर युद्ध में पाई विजय के सुसमाचार के विषय में बताता है (1 शमूएल 31:9; 2 शमूएल 1:20; 18:19, 20) जबकि बाइबल के संदर्भ में शुभ समाचार का अर्थ है कि परमेश्वर कौन है और वह अपने सताए हुए, खोए और पापी लोगों को कैसे छुड़ाता, बचाता और आशीष देता है (यशा. 52:7; 61:1)।

जब परमेश्वर ने अब्राहम को शुभ समाचार (सुसमाचार) सुनाया, तो उस संदेश का अर्थ उसे आशीष देना जिसकी प्रतिज्ञा उसने कुलपिता, उसके वंश और संसार की सारी जातियों के विषय की थी (12:2, 3) सुसमाचार के भिन्न पहलू क्या थे जो अब्राहम को सुनाया गया?

परमेश्वर की बुलाहट अनुग्रह के द्वारा थी। परमेश्वर ने हो सकता उसे इसलिए न बुलाया हो कि वह पृथ्वी पर सबसे ज़्यादा धर्मी और परमेश्वर का भय मानने वाला था। न ही यह बुलाहट इस विचारधारा पर आधारित थी कि कुल

पिता ने मूसा की सारी व्यवस्था का पालन किया, जो कि कई सौ वर्षों बाद सीनै पर्वत पर इस्राएलियों को दी गई।

लेख बिल्कुल स्पष्ट है: न अब्राहम और न उसका परिवार परमेश्वर को और उसकी व्यवस्था के विषय में ज़्यादा जानता था। वास्तव में जब यहोशु इस्राएल के पूर्वजों के विषय कहता है जो फरात नदी के पार रहते थे, उसने कहा कि "तेरह, अब्राहम के पिता और नाहोर के पिता" ने "दूसरे देवताओं की सेवा की" (यहोशु 24:2)। दूसरे शब्दों में वे दक्षिण मेसोपोटामिया में दूसरे लोगों की तरह मूर्ति पूजक थे। इसलिए प्रभु की बुलाहट पूर्णतया अनुग्रह (अयोग्यता में दया) पर आधारित थी; यह अब्राहम की वजह से नहीं था कि वह क्या है और उसने परमेश्वर की खास दया पाने के लिए कुछ किया था (रोमियों 4:1-5)। परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया क्योंकि वह जानता था कि उसकी दया से कुलपिता क्या बन सकते थे और उन आशीषों को वह अपनी पीढ़ी को दे सकते थे (18:19)।

आज भी ऐसा ही है: परमेश्वर की बुलाहट पापियों के लिए सुसमाचार के द्वारा ही है (2 थिस्स. 2:13, 14), और यह हमारी किसी भी योग्यता पर निर्भर नहीं कि हम क्या हैं या हमने क्या किया है। यह सीधी विश्वास के द्वारा अनुग्रह से आती है (इफि. 2:8, 9), ताकि हम मसीह के स्वरूप में बदल सकें (2 कुरि. 3:18)। मसीह में नई सृष्टि होते हुए (2 कुरि. 5:17), हमें संसार के लिए आशीष के पात्र बनना है, प्रभु के प्रकाश को अपने द्वारा चमकाते हुए और भले काम करते हुए जिनके द्वारा लोग परमेश्वर की महिमा कर सके (मत्ती 5:16; इफि. 2:10)।

परमेश्वर की बुलाहट से विश्वास पैदा हुआ। इब्रानियों का लेखक साफ़ कहता है कि "विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है" (इब्रा. 11:6)। जब एकमात्र सच्चा परमेश्वर अब्राहम पर प्रगट हुआ और यह घोषित किया कि वह उसे, उसके वंश और मूलभूत रूप से उसके द्वारा सारे संसार को बहुतायत से आशीष देगा, यह सबूत था जिसके द्वारा विश्वास पैदा हुआ (देखें गला. 3:8)। इस विश्वास ने ही उसे ऊर को छोड़ने और प्रतिज्ञा के नए देश की तरफ़ आगे बढ़ने में सहायता की।

इसी तरह, नए नियम में, पौलुस कहते हैं, "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। विश्वास परमेश्वर के वचन को सुसमाचार के रूप में सुनने से आता है, सुसमाचार इस विषय में कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा मानवजाति के लिए क्या किया और क्या करेगा।

परमेश्वर ने प्रेम पूर्वक खुद को अब्राहम पर प्रकट किया और सुसमाचार (शुभ संदेश) प्रचार किया कि वह है कौन (एकमात्र सच्चा परमेश्वर) और कुलपिता के लिए क्या कर सकता है। प्रभु ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि वह उससे "एक बड़ी जाति" बनाए, उसे आशीष दे, उसके "नाम को बड़ा" करे, जो "उसे आशीष दे उसे आशीष दे" और "जो उसे श्राप दे उसे श्राप दे" और उसके द्वारा "पृथ्वी के सब घराने" आशीष पाए (12:2, 3)। अंतिम में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा जो अब्राहम के वंश को कनान देश देने के लिए की गई, जिसका संकेत 11:31 और 12:1 में

दिया गया, उसे अब्राहम और उसके वंश को 12:7 और 13:14-17 में स्पष्ट कर दिया गया।

नए नियम में, जब प्रेरितों ने सुसमाचार (शुभ संदेश) पहली सदी में सुनाया, तब उनके संदेशों का विषय हमेशा यही था कि परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिए प्रभु यीशु के द्वारा क्या-क्या किया है। उन्होंने इसी बात पर ज़ोर दिया कि यीशु का जीवन और काम, उसकी प्रायश्चित्त पूर्ण मृत्यु, उसका दफनाया जाना, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण पुराने नियम की भविष्यवाणियों की परिपूर्णता थी। ये सब घटनाएं ज़ाहिर करती हैं कि परमेश्वर ने यीशु को प्रभु और ख्रीस्त (मसीह) नियुक्त किया है। जो संदेश पतरस ने पेंताकुस्त के दिन प्रचार किया सचमुच, "उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है" (रोमियों 1:16) क्योंकि इस संदेश ने लोगों को मसीह को अस्वीकार करने के पाप से बोध कराया और विश्वास को उत्पन्न किया (रोमियो 10:17) उनके हृदयों में (प्रेरितों 2:14-36)। जब लोग चिल्ला उठे "भाइयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37) पतरस ने यह कहते हुए उन्हें उत्तर दिया "पश्चाताप करो ... और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो," ताकि पवित्र आत्मा का दान पाओ (प्रेरितों 2:38)।

मन फिराव और बपतिस्मा सुसमाचार नहीं है; ये सिर्फ़ आज्ञाएं हैं उन सभी के लिए जो सुसमाचार सुन कर कायल हुए और उन्हें आवश्यकता है यह जानने की कि कैसे विश्वास में प्रतिक्रिया करे। उद्धार करने वाला विश्वास ही आज्ञाकारी विश्वास होता है; पापियों ने जब यह सुसमाचार सुना कि परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य जाति के लिए क्या किया तो उन्होंने पश्चाताप करके बपतिस्मा लिया है। उद्धार कर्मों और योग्यता के द्वारा नहीं मिलता; पौलुस इसे "विश्वास को मानना" कहता है (रोमियों 1:5) जो मसीह द्वारा लोगों के पापों को उठाने पर आधारित है।

परमेश्वर की *बुलाहट व्यक्तिगत थी, और आज्ञापालन की मांग करती थी।* अब्राहम को पहली बुलाहट ऊर (दक्षिण मेसोपोटामिया; 15:7) में मिली। प्रेरितों के काम 7:2 में स्तिफनुस के अनुसार इसमें परमेश्वर का सिर्फ़ बोला हुआ शब्द नहीं बल्कि उसकी अपनी महिमा का प्रकटीकरण (थिओफिनी) था। यह बहुत आवश्यक था क्योंकि इसमें बहुत मुश्किल मांग थी; परमेश्वर ने अब्राहम से उसके घर, देश, परिवार, कुटुम्बियों के छोड़ने के लिए और उसे दूर और अनजाने देश में जाने के लिए कहा जिसे वह उसे दिखाएगा (प्रेरितों 7:3; देखें उत्पत्ति 12:1)। जैसे कि अब्राहम एक ही समय में बहुत से देवताओं को मानता था, तो प्रभु के लिए महत्वपूर्ण था कि वह खुद को एकमात्र सच्चा परमेश्वर करके प्रकट करे जो उसे प्रभावशाली ढंग से बुला रहा था उसका पूरी तरह भूतकाल खत्म करके और विश्वास के द्वारा चलने के लिए। कुलपिता को यह मानना ही था कि उसका मन उसके साथ कोई खेल नहीं खेल रहा था और न ही यह कोई धोखा या मतिभ्रम है।[22]

अभी भी, अब्राहम को विश्वास और आज्ञापालन में बढ़ना था। इसके लिए बहुत वर्षों का अनुभव चाहिए - दोनों तरक्की और पराजयों का - ताकि आज्ञापालन के द्वारा उसका विश्वास सिद्ध और मज़बूत हो (रोमियों 4:20; याकूब 2:22)। जब वह ऊर में थे तो लम्बी दूरी तय करके प्रतिज्ञा के देश को पाने के लिए उनमें विश्वास की कोई कमी न थी। उनके विश्वास ने ही उनके कदमों को आगे बढ़ाया; परन्तु उनमें इतना विश्वास नहीं था कि वह अपने परिवार को पीछे छोड़े, और न ही विश्वास इतना मज़बूत था कि वह कनान देश पहुंच सके। वह और उनके संगी यात्री अपनी यात्रा के लगभग आधे रास्ते में ही रुक गए और उत्तर पश्चिमी मेसोपोटामिया के हारान में बस गए।

पवित्र शास्त्र यह नहीं बताता कि अब्राहम ने प्रतिज्ञात देश की ओर अपनी यात्रा में अपनी मंज़िल तक पहुँचने से 400 मील पहले ही बसने के लिए परमेश्वर की अनुमति मांगी या उसकी इच्छा को ढूँढा होगा। वह और उसका परिवार इतने वर्षों तक हारान में रहे कि वही उनका देश बन गया (12:1); और कुलपिता के पिता तेरह की मृत्यु के बाद ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने दोबारा उसके देश, कुटुम्ब और परिवार को छोड़ कनान में जाने के लिए कहा (12:1, 5)। उस समय अब्राहम 75 वर्षों का था और सारै दस वर्ष छोटी थी (12:4; 17:17) हम यह नहीं जानते कि जब परमेश्वर ने अब्राहम को पहली बार ऊर से बुलाया था तो वह कितने वर्षों के थे, परन्तु कुछ ऐसा सोचते हैं कि हो सकता है कि वह 30 या 40 वर्षों का हो। इसके अनुसार तो अब तक उन्होंने अपना आधा जीवन गलत स्थान (हारान) में बिता दिया।

12:1-3 में अपने ऊपर बुलाहट पाकर, अब्राहम का विश्वास उनके कदमों में समा गया, ताकि वह कनान की यात्रा को दुबारा शुरु करें। एक बार फिर, उन्होंने अपने परिवार को छोड़ने की बजाए अपने साथ लिया (12:4, 5)। सारै अभी भी बांझ थी और अब्राहम के कोई पुत्र या वारिस न था उसने अपने भतीजे लूत को अपने सभी सेवकों (गुलामों) और साथ ही साथ पशुओं के बड़े झुण्ड को साथ लिया और अपनी यात्रा शुरु की।

"विश्वास के द्वारा" अब्राहम और उसके परिजन आखिरकार कनान देश में पहुँचे (इब्रा. 11:8)। कुलपिता को प्रभु के प्रेरितों के जैसे ही विश्वास, आज्ञापालन, अनुग्रह और सत्य के ज्ञान में बढ़ना था (मत्ती 17:20; मरकुस 4:40; लूका 17:5, 6)। इन्हीं सब चुनौतियों का, वर्तमान समय में भी परमेश्वर के लोग सामना करते हैं। हर एक जो सुसमाचार की बुलाहट को मान कर मसीही बनता है उसे प्रभु के साथ चलने की और विश्वास में बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16; 1 पतरस 2:1, 2; 2 पतरस 3:18)।

परमेश्वर कनान में अब्राहम को दुबारा बुलाता है और इससे वह आराधना के विषय में और भी सीखता है। जब अब्राहम प्रतिज्ञा के देश पहुंचता है और शेकेम (कनान का केंद्र) की तरफ़ बढ़ता है, तो वह देखता है कि ज़्यादातर देश का भाग कनानियों के वश में है (12:6)। उसका जी इस बात की हैरानी से बैठ गया होगा

कि यह देश उसके वंश को कैसे प्राप्त होगा। उसके विश्वास को बढ़ाने और उसकी चिंता को कम करने के लिए, "प्रभु प्रकट हुए" और कुलपिता को प्रतिज्ञा करते हुए यह सुसमाचार सुनाया कि कनान देश उसके वंश को देगा। इस बात ने उसे दृढ़ किया और उसके विश्वास को इतना मज़बूत किया कि, "जो प्रभु उस पर प्रकट हुआ उसके लिए उसने वहां एक वेदी बनाई" (12:7)। उसकी यह निडरता यह दर्शाती है कि वह आराधना के लिए शेकेम के अन्य जातियों की वेदी पर नहीं जाएगा।[23] परन्तु सिर्फ़ यहोवा का ही सम्मान करेगा जिसने उसे इस विदेश में आने के लिए मेसोपोटामिया से बुलाया है।

अब्राहम जैसे-जैसे देश में आगे बढ़ा उसने बेतेल और ऐ के बीच, "अपना तम्बू खड़ा किया" और परमेश्वर के लिए एक और वेदी बनाई जहां उसने, "परमेश्वर का नाम" पुकारते हुए, आराधना की (12:8)। कनान में कुलपिता ने जहाँ कहीं भी यात्रा की, वहीं-वहीं उन्होंने अपना तम्बू खड़ा किया और आराधना के लिए वेदी बनाई (12:7, 8; 13:3, 4, 18)। तम्बू इस सत्य की गवाही देता है कि वह "प्रतिज्ञा के देश में पराए हैं" (इब्रा. 11:8, 9)। उन्होंने अपने परिवार के लिए घर के रूप में पक्के तौर पर कोई ढांचा खड़ा नहीं किया। वेदी प्रभु में उनके विश्वास की गवाही देती है और उसके लिए आभार दर्शाती है जो उन्हें मेसोपोटामिया से और मूर्तिपूजक संस्कृति जो उन्होंने पुराने वर्षों में जानी, से निकाल लाया।

कुलपिता के पड़ोसी जो कनानी थे इस बात पर ध्यान ज़रूर देते होंगे कि उन्होंने आराधना के लिए वेदी तो बनाई पर मूर्ति नहीं थी। उनके लिए कोई भी ऐसा स्थान न था जो पवित्र हो; परन्तु जहां कहीं भी वह अपना तम्बू खड़ा करते और वेदी बनाते, वहीं पर ही वह प्रभु को पुकारते थे। यह इस बात को सूचित करता है कि यहोवा सिर्फ़ एक स्थानीय देवता नहीं था जो समय और स्थान में सीमित हों जैसे कनानी अपने देवताओं को मानते थे। अब्राहम को किसी भी स्थान में खुल कर यहोवा परमेश्वर की आराधना करने की क्षमता, संसार को यहोवा के आत्मिक स्वरूप की सच्चाई बताती है। अब्राहम की विश्वासयोग्यता के अनुसार, वह परमेश्वर की आराधना करने से नहीं लजाता तब जब मूर्तिपूजक उसे देखते हों। उसके ये कार्य उसके उस परमेश्वर पर विश्वास की गवाही देते हैं जिसने उसे बुलाया, उसके आशीष देने की प्रतिज्ञा की, और जहां कनानी बसते थे वहां एक नई शुरुआत और मंज़िल दी।

आज, हमें प्रभु के द्वारा इसलिए नहीं बुलाया गया कि हम अपने कुटुम्बियों को छोड़े और दूर देश में जाकर, "अजनबी और बाहरी" बन कर जीएं (इब्रा. 11:13) जैसे अब्राहम रहें। हम प्रभु के सुसमाचार के द्वारा बुलाए गए हैं (2 थिस्स. 2:14) याद रखने के लिए कि, हम कहीं भी रहें, हम इस संसार के नहीं हैं; यह हमारा स्थायी घर नहीं है। हमें शारीरिक परीक्षाओं से और सांसारिक इच्छाओं से जो हमें और हमारे साथ दूसरों को भी गिरा देती है दूर रहना है। हमें, "परिपक्वता की तरफ़ ज़ोर देना है" (इब्रा.6:1) और "उलझाने वाले पाप को दूर करना है" (इब्रा. 12:1)। अब्राहम की तरह, हमें सुविधापूर्ण होने से और, "संसार के सदृश्य" बनने से खुद को रोकना है (रोमियों 12:2)। "अजनबियों

ओर परदेशियों की तरह" (1 पतरस 2:11) जो पराए देश से होते हुए आगे बढ़ जाते हैं। हमें यह याद रखना है हमारा सच्चा घर और उत्तराधिकार "स्वर्ग में" हैं (फिलि. 3:20; इब्रा. 11:10, 15, 16)।

विश्वास के जन की परीक्षाएं (12:10-20)

अब्राहम को अपने विश्वास में गहरी वचनबद्धता को विकसित करने के लिए समय की आवश्यकता थी। हम उसके आज्ञापालन के गवाह हैं - यद्यपि अधूरी थी - और भी अटल होती जा रही थी। फिर भी, वही व्यक्ति अपनी मुसीबत, परीक्षा, भय और नैतिक कमियों में परमेश्वर पर अपने आत्मविश्वास की कमी को प्रकट करता है। अब्राहम विश्वास में आगे बढ़ा, बहुत वर्षों बाद आखिरकार प्रतिज्ञा के देश में पहुंचा। उसने यह सोचा होगा कि ऊर और हारान छोड़ने और कनान की लम्बी एवं कठिन यात्रा पर निकलने से पहले, अपने परिवार की जिन समस्याओं पर उसे विजय प्राप्त करनी थी, वे अब उसके पीछे हैं। नई मुश्किलें उनको परखने के लिए खड़ी हो गई कि वे कनान को छोड़ दें और यहां तक कि उनकी पत्नी सारा से सम्बन्धित धोखे के द्वारा उनकी भविष्य पीढ़ी भी खतरे में पड़ गई।

अक्सर परमेश्वर की संतान इसे समझ नहीं पाती कि प्रभु अपने लोगों को क्लेश और पीड़ा को भोगने देता है। भजनकार इस सत्य से हैरान था कि एक व्यक्ति जो प्रभु में विश्वास रखता है कई बार परेशानी से गुज़रता है जबकि विधर्मी संपन्न होता है (भजन 73:2-14; देखें अय्यूब 1:1-3:26)। पवित्र शास्त्र में कुछ उदाहरण हैं जो यह दर्शाती है कि जो अपने जीवन में परमेश्वर के साथ आत्मिकता का भरपूर आनंद लेता है - जिस पर परमेश्वर खुद को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करता, जिनकी माँगों को सिद्ध करता, या जिनको बड़े खतरे से बचाता - वह भी पीड़ा और जाँच के मुश्किल समय का अनुभव करते हैं।

निर्गमन में इस तरह का सबसे बड़ा उदाहरण लिखित है जब मिस्र की गुलामी से इस्राएल की संतान को छुड़ाया जाता है। जैसे ही परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की सेना से बचाया और लाल समुद्र के पार उनको सुरक्षित पहुंचाया, तो उनका उद्धार समान आनंद का अनुभव निर्जन प्रदेश में जांच के समयों में बदल गया। सबसे पहले उन्हें कड़वा पानी ही पीने के लिए मिला (15:22-27), फिर उन्हें भूख लगी (निर्गमन 16:1-36), अंत में उनके पास बिल्कुल भी पानी नहीं था (निर्गमन 17:1-7)। जब भी इस्राएलियों पर जाँच का समय आया तो हर बार प्रभु से उनकी ज़रूरत पूरी करने हेतु उन्होंने अपना भरोसा कम दिखाया। उन्होंने मूसा के विरुद्ध जो परमेश्वर का प्रतिनिधि था बुड़बुड़ा कर परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया (देखें गिनती 14:22)।[24] उनकी यात्राओं की विभिन्न घटनाओं में, हम देखते हैं कि विश्वासियों पर कई तरह से परीक्षाएं आती हैं।

प्रतिकूल परिस्थितियों की परीक्षा। कुलपिता इतने लम्बे समय के लिए कनान में नहीं रहे होंगे कि उस स्थान में अकाल के द्वारा जाँचे जाए। इस अकाल में उनके संगी यात्रियों के लिए और साथ ही साथ उनके पशुओं और जानवरों के

लिए पानी की कमी हो सकती थी। पवित्र शास्त्र ऐसा कुछ संकेत नहीं करता कि जहां अब्राहम ने ऊर या हारान में इस तरह की परिस्थिति को देखा होगा; परन्तु अब जब वह परमेश्वर के निर्देश के अनुसार उस देश में रह रहा था, एक संकट उस पर आन पड़ा।

हमें यह नहीं बताया गया कि यह अकाल कितना भयानक था या कितनी देर तक था। बाद में, याकूब, अपने परिवार और पशुओं के साथ कनान में मिस्र से लाई गई राहत सामग्री के साथ 2 वर्षों तक गुज़ारा किया, उसके पुत्रों के बिन्यामीन के साथ वापिस जाने से पहले ताकि शिमौन को कारागार से बाहर निकाला जाए (41:56-43:23)। उस समय के दौरान वे दोबारा मिस्र जाने के लिए मुड़े, यद्यपि उन्होंने इस भयंकर अकाल में दुःख उठाया; फिर भी वह अपने साथ गुप्त शासक, यूसुफ के लिए विशेष भेंट ले जा सके। उन्होंने उसे बलसान, मधु, सुगंधित द्रव्य, गन्धरस, पिस्ता और बादाम दिए (43:11)। उनके पास इन सभी वस्तुओं का होना दर्शाता है कि अभी भी कनान देश में भोजन की वस्तुएं थी; फिर भी रोटी के लिए अनाज के बिना याकूब ने इन खाने की चीजों को अपर्याप्त समझा। अब्राहम की परिस्थितियों को साथ इस अकाल की तुलना कैसे की जाए? हमें नहीं बताया गया।

कनान में पहुँचने पर, अब्राहम को अपने लोगों के लिए भोजन और पानी और अपने जीव जन्तुओं और पशुओं के लिए घास भी मिला - परन्तु अब उनके जीवनों को बचाने के लिए ऐसी आवश्यकताओं को कहां से पूरी करेगा? यह सच है, कि अगर अकाल बहुत फैल गया होता और लम्बे समय तक होता, तो ऐसे विनाश से उसकी सम्पत्ति, जीविका और भविष्य के खत्म होने का भय उस पर आया होता। उसने क्या करना था? हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि उसने इस मुद्दे को प्रभु को बताया हो या उसकी मार्गदर्शन के लिए विनती की हो, या फिर सूखे का अंत करने और वर्षा भेजने के लिए उससे प्रार्थना की हो या फिर लगता है कि अब्राहम ऐसा व्यक्ति था जो इस सिद्धांत को मानता हो, कि, "प्रभु उनकी मदद करते हैं जो उनकी मदद खुद करते हैं"[25]; उसने एक बड़े तार्किक चुनाव लेने के लिए खुद जिम्मेदारी उठाई; यह कि प्रतिज्ञा के देश को छोड़ कर मिस्र में जाकर बस जाना। उसके इस चुनाव से मन में एक ऐसा विचार आया जो बुद्धिमान व्यक्ति बहुत वर्षों बाद पाता है; "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अंत में मृत्यु ही मिलती है" (नीति. 14:12)। जबकि अब्राहम के कनान को छोड़ मिस्र में जाने के चुनाव से उसकी या उसके साथ वालों में से किसी की मृत्यु नहीं हुई; लेकिन यदि प्रभु ने हस्तक्षेप नहीं करता तो ऐसा आसानी से हो सकता था (देखें 12:17)।

स्वाभाविक प्रश्न अभी भी बाकी हैं: क्यों परमेश्वर अपने लोगों पर मुश्किलें आने देता है? प्रेरित पतरस कहते हैं जो आग हमारे विश्वास को परखती है उस ज्वाला की तरह है जो भट्ठी में सोने से मैल को दूर कर देती है (1 पतरस 1:7)। परमेश्वर का मुश्किलों को भेजने का लक्ष्य सिर्फ़ हमारे विश्वास को मापना नहीं है, बल्कि उसे शुद्ध करना और सारे मैल (अविश्वास) को दूर करना है। जैसे एक

व्यक्ति ने यीशु को एक जगह पर ऐसे कहा, "मैं विश्वास करता हूँ; मेरे अविश्वास का उपाय कीजिए" (मरकुस 9:24)। कुछ लोगों के विचारों के विपरीत विश्वास वाले हृदयों में अविश्वास भी होता है और रह सकता है। इब्रानियों का लेखक कहता है, "विश्वास के द्वारा वे [इस्राएली] लाल समुद्र को पार किए" (इब्रा. 11:29); तो भी निर्जन प्रदेश में उनका अविश्वास कितनी जल्दी प्रकट हो गया! परमेश्वर पर उनके भरोसे की कमी लगातार उनके हृदयों में कनान की सीमा तक पहुँचने तक बनी रही (गिनती 14:11) उसी तरह से, यीशु के शिष्यों ने उन पर विश्वास किया और उसका अनुसरण करने के लिए अपने जाल और व्यवसायों को छोड़ दिया; फिर भी उनके हृदयों में अविश्वास के लिए स्थान था। ये आशंकाएं तब दिखाई दी जब वह पकड़ लिया गया, जिससे पतरस ने अनका इनकार किया और दूसरे उसे छोड़ कर रात में भाग गए (मत्ती 26:56; मरकुस 14:66-72)।

विश्वास का विकास शारीरिक मांसपेशियों के जैसे ही होता है। मांसपेशियां एक ही तरीके से बढ़ सकती हैं जब व्यायाम के दौरान उनकी क्षमता से भारी और मुश्किल कुछ किया जाए, और विश्वास की आत्मिक मांसपेशियों को बढ़ाने का एकमात्र तरीका है कि जीवन की मुश्किल परिस्थितियों से होकर जाना। कुछ लोग तो बहुत कम समय में दृढ़ विश्वास विकसित कर लेते हैं; फिर भी, हम में से बहुतों के लिए अब्राहम की तरह, कई वर्ष और संघर्ष लग जाते हैं विश्वास को इतना दृढ़ विकसित करने के लिए ताकि एक ढाल की तरह "शैतान के अग्निमय बाणों" के विरुद्ध (इफि. 6:16) हमारी सुरक्षा कर सके।

खुद को बचाने के लिए झूठ की परीक्षा। कुलपिता ने अकाल की समस्या से निकालने के लिए कनान को छोड़ दिया। मामला यह नहीं कि वह कितना भयानक था कितनी देर के लिए था, पर बात यह थी, कि वह एक समस्या से भाग कर उससे बड़ी समस्या में चले गए। जब कभी भी कोई अपनी परीक्षा से भागता है, उसका सामना करने की बजाए, तो और परीक्षाएं आने का मार्ग खुल जाता है। अब तक यह बात बताई नहीं गई कि अब्राहम ने यह मुद्दा प्रभु को बताया, बल्कि पहले की तरह उसने अपने संगी यात्रियों की सलाह ली जिन्होंने मिस्र में खाने की बहुतायत के विषय उसे बताया। जैसे ही वह मिस्र के पास गया पहुँचा, उस पर भय छा गया; क्योंकि उसने यह भी सुना था कि मिस्रियों के द्वारा दूर देश से आए परदेसियों का फायदा उठाया जा रहा था, जिन्होंने उन्हें मार डाला और उनकी पत्नियों को रख लिया। इसी कारण अब्राहम ने यह फ़ैसला किया कि वह सारा को मिस्रियों के सामने अपनी बहन कह कर परिचय देगा। जबकि यह एक अधूरी सच्चाई थी (देखें 20:1, 2, 12, 18), यह सोचा समझा धोखा और घिनौनी चाल थी, जिसके कारण परमेश्वर की प्रतिज्ञा की हुई संतान अर्थात इसहाक के जन्म रुक सकता था। इसके अतिरिक्त, यह कुलपिता के स्वार्थी स्वभाव को प्रकट करता है। अपनी पत्नी को किसी भी कीमत पर प्यार, पालना, सुरक्षित रखने में असफल होते हुए (देखें इफि. 5:25-29), अब्राहम अपनी सबसे बड़ी चिंता व्यक्त करता है: "... जिससे तेरे कारण मेरा कल्याण हो और मेरा प्राण बच सके [इसके बावजूद कि तुम्हारे साथ क्या होगा]" (12:13)

जबकि सारा का पिता जीवित न था और अब्राहम स्वयं को उसका भाई बताता है, तो प्राचीन संसार की सभ्यता का यह चलन था कि अगर कोई उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था तो कुलपिता को दुल्हन की कीमत देता। यह अपने स्वार्थ के लिए अब्राहम का धोखे देने का एक काँटा था: पहला अब्राहम का जीवन बच जाएगा; दूसरा, इस सौदे से वह और धनी हो जाएगा। वास्तव में, बिल्कुल ऐसे ही हुआ जब फिरौन सारा को रानीवास में ले गया और भेंट स्वरूप कुलपिता को भेड़ें, बैल, गदहे, ऊँट और गुलाम दिए (12:16)।

जब महामारी फिरौन के घराने पर आई और उसे अहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ, तो उसने अब्राहम को उसकी बेईमानी के लिए डांटा और उसे मिस्र से निकाल दिया। जब अब्राहम के स्वार्थी पाखंड का पर्दाफाश हुआ और एक मूर्ति पूजक राजा ने उसको झूठा ठहराकर डांटा तो अब्राहम के घमंड को गहरा धक्का लगा होगा। यह एक दर्दनाक वाक्या था, परन्तु यह स्पष्ट रूप से आवश्यक था कि भविष्य के ईमानदारों के पिता को सिखाया जाए कि खुद की योजनाओं पर नहीं बल्कि प्रभु पर निर्भर होता है।

विश्वास करने वाले लोगों के लिए ऐसी कहानियां अक्सर उलझन का कारण होती है। हम अपने नायकों को हमेशा ऊँचे स्थान में रखना चाहते हैं जैसे कि वे ऐसे योद्धा है जिनके चमकदार कवच में कोई आत्मिक दरार न हो। फिर भी बाइबल उनके पापों के विषय में स्पष्ट है जिनको प्रभु ने अपने सेवक होने के लिए बुलाया है। वह उनकी असफलताओं पर परदा नहीं डालती। हम मूसा की कमियों को पढ़ सकते हैं (गिनती 20:1-13), दाऊद (2 शमूएल 11:1-12:14), सुलैमान (1 राजा 11:1-43), और प्रेरितों और कमियों घोटा करके या हटा कर एक तरफा विचार नहीं देता।

इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र बाइबल के चरित्रों के पापों का ईमानदारी से चित्रण करती है ताकि वह हर पीढ़ी के विश्वासियों के लिए चेतावनी के रूप में हो। परमेश्वर के लोग कई बार से ज़्यादा भरोसा कर लेते हैं, यह सोचा कि वे इतने मज़बूत या इतने आत्मिक हैं कि परीक्षा में गिर ही नहीं सकते और गम्भीर पाप के गुलाम बन जाते हैं। मत्ती 26 में, जब चेलों ने यीशु को यह कहते सुना, "तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा," तो सभी ने इनकार कर दिया कि वे ऐसा काम करके दोषी ठहर सकते हैं (मत्ती 26:21, 22)। पतरस, प्रेरितों में से एक, प्रभु से कहता है, "चाहे सभी तेरी वजह से ठोकर खाएं तो खाएं, पर मैं ठोकर नहीं खाऊंगा," पर यीशु ने उत्तर दिया, "मुर्ग की बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इनकार करेगा" (मत्ती 26:33, 34)। अंत में, पतरस ने उससे कहा, "चाहे मुझे तेरे लिए मरना भी पड़े, मैं तेरा इनकार नहीं करूंगा।" अक्सर यह उपेक्षा की गई "सभी चेलों ने एक समान उत्तर दिया" (मत्ती 26:35)। यीशु के शिष्यों जो यीशु के साथ तीन साल तक रहे असफलता का बुरा वाक्या इस बात को केन्द्रित करता है कि परमेश्वर के लोगों को परीक्षा की शक्ति को कम नहीं समझना चाहिए। कोई भी ऐसा नहीं जो इसकी पकड़ से बच सका हो।

ऐसी ही चेतावनी प्रेरित पौलुस के द्वारा कुरिन्थियों के भाइयों को दी गई, जो शायद यह मानते थे कि परीक्षा उन्हें हरा नहीं सकती क्योंकि वह अपने आत्मिक वरदानों की प्रफुल्लता का आनंद उठा रहे थे। इसके विपरीत, प्रेरित यह बताते हैं कि एक "आत्मिक व्यक्ति" बनना उनके लिए बहुत दूर की बात है। "मसीह में दूध पीते बच्चों" की तरह सिर्फ़, "शारीरिक लोग थे" (1 कुरि. 3:1)। उनकी आत्मिक अपरिपक्वता का सबूत यह था कि उनके बीच "डाह और झगड़े" होते थे। (1 कुरि. 3:2, 3)। वह एक दूसरे के विरुद्ध "घमंड से फूले हुए" और "अहंकारी" थे (1 कुरि. 4:6)।

प्रेरित परमेश्वर के बच्चों को यह याद रखने के लिए कहते हैं कि जो उनके आत्मिक पूर्वजों के साथ हुआ, जो सब बादल के नीचे थे और सब समुद्र के बीच से पार हो गए, और सब ने बादल में, और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया (1 कुरि. 10:1, 2) बात बनाए रखते हुए उसने कहा कि, "सबने एक ही आत्मिक भोजन किया और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी और वह चट्टान मसीह था" (1 कुरि. 10:3, 4)। पौलुस, कुरिन्थियों के लोगों को इस्राएलियों की अयोग्यता के विषय में स्मरण दिलाते हुए डाँटता है। वह कहता है, "फिर भी उनमें से बहुतों के साथ परमेश्वर प्रसन्न नहीं था; इसलिए वे निर्जन प्रदेश में ढेर हो गए। अब ये बातें हमारे लिए आदर्श ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं को लालच न करें" (1 कुरि. 10:5, 6)। प्रेरित कुरिन्थियों के लोगों को चेतावनी देता है कि वे निर्जन प्रदेश के इस्राएलियों का अनुकरण न करें और इस संदर्भ में वह मसीहियों के यह सिखाए कि, "वे चौकस रहें, कि गिर न पड़ें" (1 कुरि. 10:12)।

अब्राहम का पाप आज हमारे लिए एक नकारात्मक उदाहरण देता है। परमेश्वर का वचन मानो हमें यह कहता है, "बिना उनको ध्यान में रखें स्वार्थी न बनो, खुद को बचाने के लिए झूठ न बोलें और धोखा न दें, भले ही वे ऐसे लोग न हों जिनसे आप प्रेम रखते, पसंद करते और ध्यान रखते हैं।"

समाप्ति नोट्स

[1]केनेथ ए. मैथ्यूस, *उत्पत्ति 11:27-50:26*, दि न्यू अमेरिकन कमैंट्री, वाल. 1B (नेशविल्ले: ब्राडमैन एंड होलमन पबलिशर्स, 2005), 109. [2]गॉर्डन जे. वेनहाम, *उत्पत्ति 1-15*, वर्ड बाइबल कमैंट्री, वाल. 1 (वाको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1987), 274. [3]NASB में 12:2 के इब्रानी वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है: "तू आशीष होगा।" परन्तु अधिकाँश अनुवाद, मार्जिनल। [4]इब्रानी भाषा में वही शब्दावली है (עֶבֶד, *'ebed*) जिसका अर्थ "सेवक" या "दास" है; परन्तु उपरोक्त संदर्भ में, ऐसा लगता है कि दासों का उल्लेख किया गया है क्योंकि 14:14 में, अब्राहम के 318 योद्धा के विषय में कहा गया है जो "घर में उत्पन्न हुए थे।" [5]क्योंकि अब्राहम के सेवकों/दासों की इतना बड़ा सैन्यदल था जो कि चरवाहे-योद्धा थे (14:14), सामान्य रूप से यह अनुमान लगाया गया है कि इस समूह में एक हज़ार से भी अधिक लोग थे जिनमें पत्नियाँ और बच्चे भी सम्मिलित हैं। [6]हो सकता है कि अब्राहम ने दमिश्क के एलीएजेर को लिया हो जब वह हारान से कनान की ओर यात्रा करते हुए

दमिश्क के पास से गुज़रा हो (15:2)। [7]नया नियम में, सूखार नाम का नगर प्राचीन शक्केम के नजदीक स्थित था (यूहन्ना 4:5)। आज, यह नेबलुस नगर के आस पास पाया जाता है। [8]व्यवस्थाविवरण 11:30 में "मोरे के बांज वृक्षों" इसी इब्रानी अभिव्यक्ति का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। [9]पहले हारान में परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बातचीत की (12:1, 4), परन्तु दर्शन का उल्लेख नहीं किया गया है। [10]देखें 13:15, 16; 15:18; 17:7-10, 12, 19; 22:17, 18; 24:7; 26:3; 28:4, 13.

[11]कुलपतियां के द्वारा कई वेदियाँ बनाई गईः अब्राहम ने शकेम में (12:7), बेतेल में (12:8), हेब्रोन में (13:18), और मोरिय्याह पहाड़ पर (22:9); इसहाक बेर्शेबा में (26:25); और याकूब ने शकेम में (33:20) और बेतेल में (35:7)। [12]ऐ नगर की पहचान पर विचार विमर्श के लिए, देखें आर. के. हैरीसन, "ऐ," इन *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया*, 3डी एड., इड. जेफ्री डब्लयू. ब्रोमिले (ग्रैण्ड रेपिडस, मिश.: डब्ल्यूएम बी. एर्डमेनस पबलिशर्स कम्पनी, 1979), 1:81-84. [13]बाइबल के अलावा प्राचीन विवरण सूखे और अकाल से बचने के लिए मिस्र देश में आने वाले के विषय बताते हैं। उदहारण के लिए, मिस्री लेख उल्लेख करते हैं कि एदोम से बेदुइन जाति को मिस्र में प्रवेश के लिए और "उनको और जानवरों को जीवित रखने के लिए जल के ताल को प्रयोग करने की अनुमति दी थी" (जोहन ए. विल्सन, ट्रांस., "दि रिपोर्ट ऑफ फ्रंटीयर ऑफिसयल," इन *एंशियन्ट नीयर ईस्टर्न टैक्टस पुराना नियम से सम्बन्धित*, 3डी एड., एड. जेम्स बी. प्रिचार्ड [प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969], 259)। [14]अब्राहम ने जब हारान को छोड़ा था तब वह पचहत्तर वर्ष का था (12:4), और सारा उससे दस वर्ष छोटी थी (17:17)। [15]मिस्रियों की भाषा में, शब्द "फिरौन" का मूल अर्थ है "बड़ा घर," जो राजा के महल का उल्लेख है। कुछ समय के बाद, इसे राजा की उपाधि के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। [16]यह भुगतान "दहेज" का ही एक रूप समझा जाना चाहिए מֹהַר (*mohar*) (देखें 34:11, 12; निर्गमन 22:16; 1 शमूएल 18:22-27)। क्योंकि सारा का पिता अब जीवित नहीं था (11:32), दहेज उसके भाई ने अब्राहम को दिया गया। [17]यदि अब्राहम को अकाल के कारण कनान को छोड़ना था और मिस्र जाना था, तो यह मान लेना उचित दिखाई देता है कि लूत और उसके साथ सभी लोगों, पशुओं को भी भोजन और जल के लिए साथ वहाँ जाना था। [18]जूरी ज़ेरिनस, "ऊँट," *दी एंकर बाइबल डिक्शनरी* में, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यार्कः डबलडे, 1992), 1:825-26. [19]नेगा' का क्रिया रूप 2 राजा 15:5 में प्रयोग किया गया है, जो बताता है कि "परमेश्वर ने राजा को ऐसा मारा।" [20]परन्तु, इस तरह की मिलती जुलती परिस्थिति के लिए उसका प्रत्युत्तर 12:11-13 में है।

[21]गैरहड फैड्रिक, "εὐαγγελίζομαι," *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामैंट*, ट्रांस. और एड. जौफ्रे डबल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिक्ख.: बी. एनड्रमन्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1964), 2:707-8 [22]प्रभु ने खुद को थिओफिनी के द्वारा बाइबल के कुछ महत्वपूर्ण चरित्रों पर प्रकट किया जब उसने उन्हें अपने पुराने जीवनों को छोड़ और खतरनाक लक्ष्यों को आरम्भ करने के लिए बुलाया। महत्वपूर्ण उदाहरण है मूसा (निर्गमन 3:1-4:17); यशायाह (यशा. 6:1-13), और तरसुस का शाऊल (प्रेरितों 9:3-20)। [23]पुरातत्त्व विशेषज्ञों ने यह खोज की कि पुरातन शेकेम के पहले बसने की तारीख 4500 ई.पू. तक ले जाती है, और अब्राहम के समय के पास उस इलाके में अच्छे ढंग से संगठित समाज था। देखें लारेंस ई.टूंब्स "शेकेम (स्थान)," *एंकर बाइबल डिक्शनरी* में, एड. डेविड नोयल फ्रीमैन (न्यूयार्कः डबलडे, 1992), 5:1178-79. [24]1 राजा 18:16-19:18 से एल्लियाह के अनुभव की तुलना करें। [25]उत्पत्ति में कई घटनाओं में अब्राहम के ऐसे रुख के प्रमाण मिलते हैं, जैसे जब वह दमिश्क के एलीएजेर को अपना वारिस बनाने के लिए उसे गोद लेना चाहता था (15:2-4) और जब वह हाजिरा सारा की दासी के द्वारा बच्चा पाने में सहमत हुआ (16:1-4)। ऐसा फिर देखा गया जब वह अविश्वास में हँसा कि सारा को इतने बुढ़ापे में बच्चा हो सकता है और परमेश्वर से विनती करता है कि इशमाएल को उसका प्रतिज्ञा किया हुआ वारिस होने दे (17:15-18) अंत में; यह स्वभाव तब दिखा जब उसने फिर झूठ बोला, जैसे उसने मिस्र में किया, गरार के राजा को यह कायम करने के लिए कि सारा उसकी बहन थी (20:1, 2)।